रिमझिम 4

चौथी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0423

यह किताब ______________ की है।
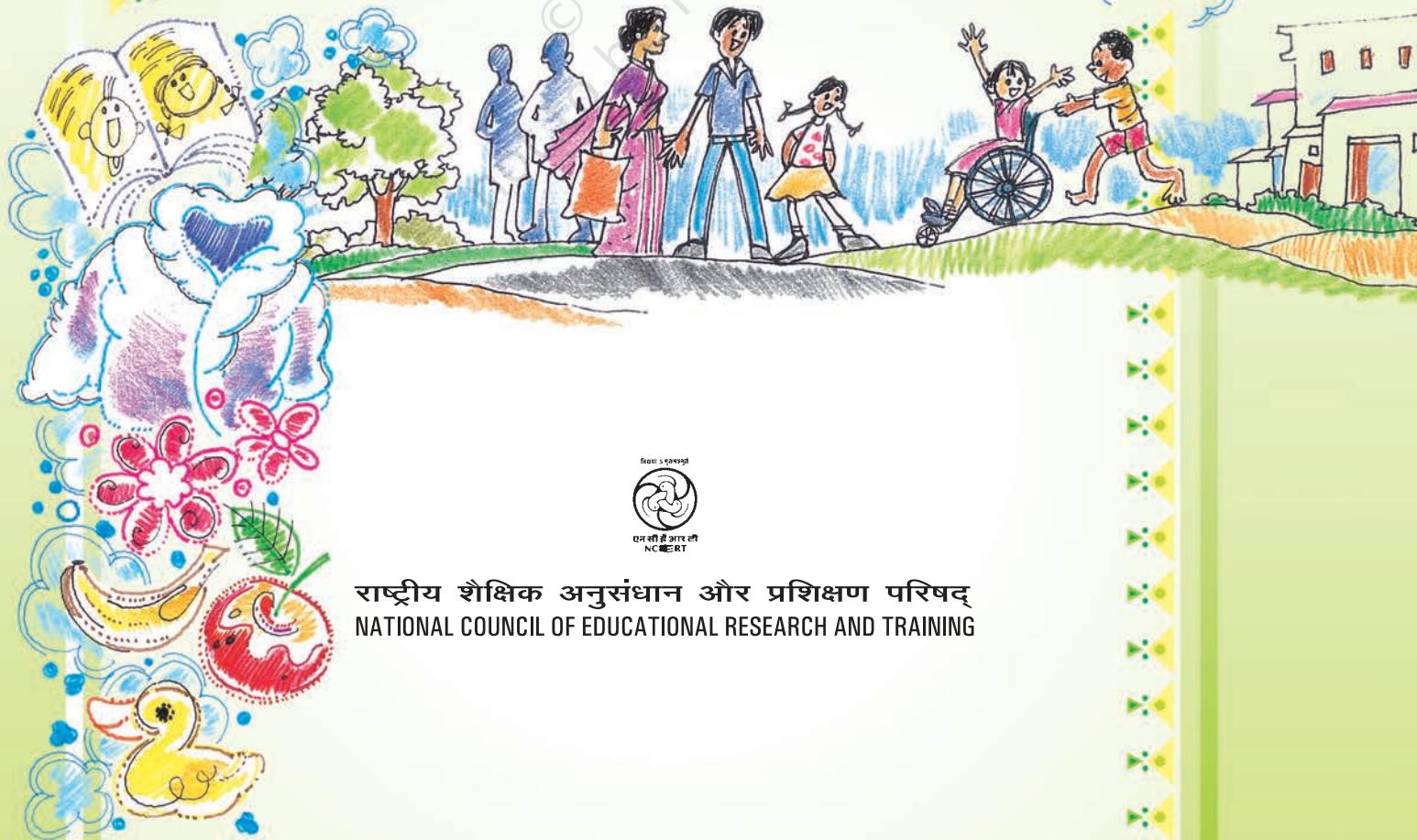
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण
नवम्बर 2007 कार्तिक 1928
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
फरवरी 2014 माघ 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
मार्च 2017 फ़ाल्गुन 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941

PD 440T RPS

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा आनंद ब्रदर्स, 1739, एच.एस.आई.आई. डी.सी इंडस्ट्रियल इस्टेट, राय, डिस्ट्रिक्ट सोनीपत (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-666-7

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी	: *दीपक जैसवाल*

आवरण एवं सज्जा
जोएल गिल

चित्र
जोएल गिल, बरान इज़्लाल, श्रीविद्या नटराजन

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनायी गयी पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान

किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 नवंबर 2006

बड़ों से दो बातें

आपको याद होगा कि कक्षा तीन की पाठ्यपुस्तक ***रिमझिम-3*** में हमने निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की थी–

- पढ़ते समय बच्चे लिखी गई बात को अपने **पूर्वज्ञान** और पिछले अनुभव के साथ जोड़ते हुए पढ़ते हैं। इससे उन्हें पाठ को समझने में मदद मिलती है।
- अभ्यास प्रश्न केवल यह आँकने का मापदंड नहीं हैं कि बच्चों को पाठ कितना याद रहा। ***रिमझिम*** में दिए गए प्रश्न बच्चों को भावनात्मक रूप से पाठ से जुड़ने, बोलने, सोचने और कल्पना करने, तर्क एवं विश्लेषण करने, अवलोकन करने और **जीवन के विविध संदर्भों में भाषा का प्रयोग** करने के अवसर देते हैं।
- हर भाषा के पीछे कुछ नियम काम करते हैं जिनसे वह भाषा बनती है। अपने आसपास बोली जाने वाली **भाषा को सुनते-सुनते बच्चे उसके नियम सहज ही सीख लेते हैं।** स्कूल में भी यह **सहज प्रक्रिया** जारी रहनी चाहिए। इसी उद्देश्य से व्याकरण और भाषा संबंधी प्रश्न ***रिमझिम*** में पाठ की विषय सामग्री (जिसमें चित्र भी शामिल हैं) से जोड़े गए हैं।
- भाषा की **पुस्तक में चित्र** केवल पुस्तक को आकर्षक बनाने के लिए नहीं होते हैं; ये पाठ की समझ में विस्तार और गहराई लाने के साधन भी हैं। चित्रों को छोटे समूहों में बैठकर बारीकी से देखना और उन पर बातचीत करना बच्चों की **बौद्धिक क्षमता** का विकास करता है जिनमें **विश्लेषण और तर्क की क्षमता** जैसे ज़रूरी कौशल भी शामिल हैं।

  ऊपर कही गईं सभी बातें प्रारंभिक स्तर की सभी कक्षाओं के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं। इनके साथ-साथ कुछ और बातों की चर्चा भी हम यहाँ करना चाहेंगे।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह सलाह देती है कि **कक्षा की गतिविधियों को बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभवों से जोड़ा जाए** ताकि अध्यापन और परीक्षा पाठ्यपुस्तक केंद्रित बनकर न रह जाए। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा के बाहर की दुनिया (जिसमें पास-पड़ोस, बाज़ार, बगीचा, संगी-साथी आदि सभी शामिल हैं) से भी उतनी ही प्रभावित होती है जितनी कक्षा के भीतर आयोजित होने वाली गतिविधियों से। भाषा की कक्षा में बच्चों के साथ मिलकर जो-जो गतिविधियाँ की जा सकती हैं उनका क्षेत्र बहुत व्यापक है। ***रिमझिम*** केवल सुझाव के तौर पर उसके कुछ नमूने और संकेत प्रस्तुत करती है। इन गतिविधियों में हिंदी में उपलब्ध बाल साहित्य लगातार शामिल किया जाना चाहिए। बच्चों की भाषा को विस्तार देने के लिए यह ज़रूरी है कि आप इस प्रकार की अन्य कहानियाँ और कविताएँ आदि पढ़ने के अनेक अवसर बच्चों को दें।
- अभ्यास प्रश्न करवाते समय बच्चों की भाषायी क्षमता को ध्यान में रखते हुए आपको कई निर्णय स्वयं लेने हैं। ***रिमझिम*** में **लिखित और मौखिक कार्य** संबंधी स्पष्ट निर्देश कुछ जगहों पर नहीं दिए गए हैं। वहाँ आप स्वयं यह तय करें कि वह गतिविधि मौखिक रूप से करवाई जानी है या लिखित रूप से। कई स्थानों पर प्रश्नों के साथ दिए गए चिह्नों (icons) से आप समझ जाएँगे कि वह अभ्यास कैसे करवाना है।

- भाषा के संबंध में परीक्षा लेने की पारंपरिक प्रणाली अक्सर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों से मेल नहीं खाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के सिद्धांतों में रटने की प्रवृति को हतोत्साहित करने पर ज़ोर दिया गया है। रूपरेखा में यह बात स्पष्ट रूप से कही गई है कि **परीक्षा कक्षा की गतिविधियों से जुड़ी होनी चाहिए**। भाषा की परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिए जिनका उत्तर बच्चे अपनी समझ, सोच और कल्पना से दे सकें। प्रश्न-पत्र बनाते समय ***रिमझिम*** में दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक देखकर इसी तरह के प्रश्न बनाएँ न कि आमतौर पर पूछे जाने वाले ऐसे रूढ़ प्रश्न जो कि पाठ में दी गई जानकारी दोहराने या उसे रटने की प्रवृति को बल देते हों।
- रटने की प्रवृति को बढ़ावा देने वाली एक अन्य परंपरा व्याकरण के नियमों को अलग से पढ़ाने की है। ***रिमझिम*** में हमारा प्रयास है कि **बच्चे व्याकरण की अवधारणाओं को विविध किस्म के पाठों के संदर्भ में पहचानना और उनका उचित प्रयोग करना** सीख सकें। संदर्भ से काटकर इन अवधारणाओं को देखना रटने की परंपरा को बढ़ावा देना होगा। अत: आप से अनुरोध है कि व्याकरण की अवधारणाओं की परिभाषा लिखवाने और उन्हें याद करवाने से बचें। इस बात की चर्चा ***शिक्षक संदर्शिका,*** *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम* में विस्तार से की गई है।
- भाषा शिक्षण का उद्देश्य भाषा की समझ और अभिव्यक्ति का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा आत्मीय परिवेश ज़रूरी है जिसमें हर **बच्चा अपनी सोच और भावनाओं को बगैर डर और संकोच के व्यक्त कर सके**। इसके लिए नीचे दिए गए तीन बिंदुओं पर आपका संवेदनशील होना ज़रूरी है–

– बच्चों की **सीखने की गति** समान नहीं होती। सीखने में बच्चों का उत्साह पैदा करने और उसे बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें अपनी गति से सीखने की छूट मिले। अत: आपको कई अवसरों पर धैर्य रखना होगा।

– बच्चे का परिवेश उसकी भाषा को गढ़ता है। इसलिए बच्चे के उच्चारण और शब्दावली पर परिवेश का प्रभाव होना स्वाभाविक है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम **बच्चे के घर की भाषा और संस्कृति** को सहज रूप से स्वीकार करें ताकि बच्चे में सीखने का आत्मविश्वास और उत्साह पैदा हो सके। ***रिमझिम*** में भाषा के कई ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में दिए गए सुझाव के अनुरूप **बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल** करते हैं। बहुभाषिकता हमारे देश की एक सांस्कृतिक विशेषता है जो किसी न किसी रूप में हर कक्षा में देखी जा सकती है। विभिन्न शोधों आदि के माध्यम से यह बात पूरे विश्व में सिद्ध हो चुकी है कि कक्षा में मौजूद भाषायी विविधता सोचने, समझने और व्यक्त करने के तरीकों का विस्तार करती है।

– किसी भी भाषा की समृद्धि तथा जीवंतता की पहचान उसके विभिन्न रूपों, शब्दों तथा शैली की विविधता से होती है। रिमझिम की रचनाओं में आपको हिंदी के विभिन्न रूपों की झलक मिलेगी। कुछ ऐसे शब्द मिलेंगे जिनका अर्थ हमारे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग है। जैसे-सीताफल को कहीं शरीफा कहा जाता है तो कहीं कद्दू को सीताफल कहते हैं। बच्चों से इस बारे में चर्चा करें। चर्चा के दौरान बहुत से शब्द निकल कर आएँगे।

– बच्चों के उत्तरों और उनमें निहित सोच एवं कल्पना को स्वीकार करना ज़रूरी है। शुरू से ही बच्चों की त्रुटियाँ निकालना, उनकी आलोचना करना और उन्हें दंडित करना शिक्षा के बुनियादी उद्देश्यों को खंडित और ध्वस्त कर देना है। प्रारंभिक स्तर में की गई **त्रुटियाँ बच्चों की सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक और अस्थायी चरण होती हैं**। त्रुटियों से आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि बच्चे कितना सीख पाए हैं। त्रुटियों को सुधारने से पहले उनका विश्लेषण करना ज़रूरी है जिससे यह तय हो सके कि उन पर कब और कैसे ध्यान दिया जाना उपयोगी होगा। बच्चों की भाषा की कई आँचलिक रंगतें अक्सर त्रुटियाँ समझ ली जाती हैं। उन्हीं त्रुटियों पर ध्यान दें जो बातचीत तथा समझ में बाधा बन रही हों। साथ ही यह भी तय करना ज़रूरी है कि किस त्रुटि पर कब ध्यान दिया जाए जिससे बच्चों को स्वयं उस त्रुटि को अपनी समझ और कोशिश से दूर कर पाने का अवसर मिल सके। जहाँ तक परीक्षा की बात है, परीक्षा में त्रुटियों पर ध्यान देने के बदले बच्चे द्वारा कही गई बात को ध्यान में रखना अधिक उपयोगी रहेगा। मूल्यांकन के बारे में भी शिक्षक संदर्शिका में विस्तार से चर्चा की गई है।

- ***रिमझिम 3*** की ही तरह ***रिमझिम 4*** में भी कई पाठ सिर्फ़ पढ़ने के लिए दिए गए हैं उनके साथ कोई प्रश्न नहीं है। इन पाठों को देने का उद्देश्य बच्चों को **पढ़ने की अतिरिक्त सामग्री** उपलब्ध कराना है जिसे वे प्रश्नों के बोझ से मुक्त होकर आनंद लेते हुए पढ़ सकें। बच्चों को पढ़ने के जितने अधिक अवसर मिलेंगे, उतना ही अधिक उनकी पढ़ने की गति एवं शब्द-भंडार बढ़ेगा तथा वर्तनी संबंधी त्रुटियों में कमी आएगी।
- ***नसीरूद्दीन का निशाना*** पाठ चौथी की अंग्रेज़ी पाठ्यपुस्तक में भी दिया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि एक पाठ्यपुस्तक की झलक दूसरी पाठ्यपुस्तक में दिखना बच्चों के लिए रोचक तो होगा ही इसके साथ ही अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में इस पाठ को समझने में भी बच्चों को मदद मिलेगी। अत: आपसे हमारा अनुरोध है कि पाठ ऐसे पढ़ाया जाए कि हिंदी की कक्षा में पढ़ने के दौरान ही बच्चे अंग्रेज़ी की कक्षा में इस पाठ को पढ़ें। बच्चों द्वारा तीसरी कक्षा की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक *आसपास* में पढ़े गए पाठ से एक अभ्यास को जोड़ा गया है। इस प्रकार ***रिमझिम 4*** का **अन्य विषयों के साथ संबंध** जोड़ने का प्रयास किया गया है।
- पाठ्यपुस्तक निर्माण एक सतत् प्रक्रिया है। जिसमें रचनात्मक सुधारों की गुजाइंश सदैव बनी रहती है। इस किताब के विकास में ***रिमझिम 1 और 3*** के संबंध में **प्राप्त शिक्षक के सुझावों और प्रश्नों को ध्यान में रखा गया है**। इसी क्रम में कठिन शब्दों के अर्थ भी कहीं-कहीं दिए गए हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सभी मूल्यों की जड़ में सामाजिक सद्भाव एवं शांति को चिह्नित करती है और इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक विषय को महत्त्व देती है। शांतिपरक मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भाषा किसी भी संस्कृति में मूल्यों को बनाए रखने का काम करती है। दूसरों के प्रति खासकर **असमानता, क्षमता** या **पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों को संवेदनशील** बनाना भी भाषा-शिक्षण के दौरान होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पुस्तक में *सुनीता की पहिया कुर्सी* पाठ दिया गया है। इसी तरह की अन्य सामग्री पत्र-पत्रिकाओं से या स्वयं विकसित करके शिक्षक उनका उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक को चाहिए कि मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सुनिश्चित करते हुए कक्षा में अपने और बच्चों के व्यवहार में उसकी परिणति लाए।

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद् उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली; प्रकाशक, मनोज पब्लिकेशंस, जयपुर; साहित्य अकादमी, दिल्ली; प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली; एकलव्य, भोपाल; प्रथम संस्था, नयी दिल्ली; तूलिका प्रकाशन, चैन्नई के हम आभारी हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नयी दिल्ली एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नयी दिल्ली के प्रति भी सहयोग के लिए हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज,* कंप्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; विजय कौशल, उत्तम कुमार, सीमा मेहमी, ममता, पूजा शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *आरती बलूनी, प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता,* मिरांडा हाउस, नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक,* नगर निगम प्राथमिक सहशिक्षा विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका,* केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कृष्ण कुमार, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मालविका राय, *शिक्षिका,* हैरीटेज़ स्कूल, डी-II, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

रमेश कुमार, *प्रवक्ता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्रवक्ता,* जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

किताब में आए चिह्न

तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।

लिखो

खेल

बातचीत के लिए

खोजो

बनाओ

तुम्हारी कल्पना से

सिर्फ़ पढ़ने के लिए

कहाँ क्या है